मूत्र पथरी (Kidney Stone)

किडनी मे जल एवं अनचाहे पदार्थो की असमानता के कारण पथरी उत्पन्न होती है । ऐसी परिस्थिती मे अनचाहे पदार्थ मूत्र से अलग होकर स्थापित होते है । एवं स्थापित पदार्थोसे मूत्र पथरी तैय्यार होती है। मूत्र पथरी , युरिक ॲसिड, कॅल्शियम फॉस्फेट ऑक्जलेट की बनती है।

पथरी होने की कारण

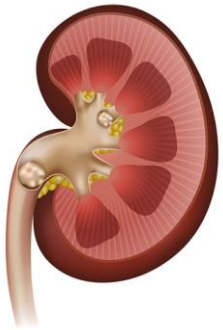

- पानी कम पीना
- ऑक्जलेट युक्त जैसे काजू, कॉफी , चॉकलेट, हरी सब्जियॉं का सेवन
- मूत्र इच्छा बढानेवाली दवाऐं जैसे स्टेरॉइडस् एसिडीटी की दवाओंका सेवन
- पारिवारीक मूत्रपथरी का इतिहास
- जन्मसे किडनी अथवा गुदद्वार की अथवा गाऊट की समस्या

लक्षण एवं चिन्ह

- पीठ के मध्ये हिस्से मे दर्द प्रारंभ होकर दोनो ओर फैलना
- जी मचलना एवं उल्टी होना
- बार बार मूत्र लगना, जलन होना, गुलाबी अथवा लाल रंग का मूत्र होना
- पीठ के निचले हिस्से एवं इर्द गिर्द स्पर्श करनेपर दर्द होना

उपयुक्त जाँच

- मूत्र जाँच
- रक्त के माध्यम ये मूत्रपिंड (Kidney) की जॉच, नियमित कार्यरत रक्त मे कॅल्शियम, युरिक ॲसिड के स्तर की जाँच
- नॉन कॉन्ट्रास्ट हॅलिकन सी.टी स्कॅन , क्ष किरण जाँच
- पेट की अल्ट्रासाउंड जाँच

उपचार पध्दती

- NSAIDS, नॉन स्टेरॉईड ऐंटी इन्फ्लेमेटरी दवाऐं, सूजन, बुखार, दर्द कम करती है। किंतु इनमे आयबुप्रोफेन यह दवा कुछ रोगियोंको रक्तस्त्राव एवं मूत्रपिंड की समस्या को बढावा दे सकती है।
- डाययुरेटिक यानी मूत्रइच्छा बढानेवाली दवाऐं
- शरीर के क्षार नियंत्रित रखना
- मूत्रपथरी स्वयं न निकलने की परिस्थिती मे निकालने हेतू शल्यक्रिया कर आकार एवं स्थान पर उपचार की दिशा तय की जाती है

रुग्ण समुपदेशन

- अधिकाधिक द्रव्यदार्थो का सेवन
- मूत्र इच्छा टाले नही , आवश्यकतानुसार मूत्रविसर्जन करे
- व्यायाम नियमित करे
- पथरी निर्माण होनेवाले पदार्थ टाले, जैसे चॉकलेट, बीट, पालक चाय एवं काजू दाने, जिसमे ऑक्सलेट फॉस्फेट का प्रमाण अधिक होता है, जिसके चलते मूत्रपथरी तैयार होती है